● सुनो, समझो और बोलो :

१४. बिना टिकट

–मेहंद्र सांघी

इस संवाद में राष्ट्रीय संपत्ति का उपयोग ईमानदारी, सच्चाई एवं नियमानुसार करने का संदेश दिया गया है । बिना टिकट यात्रा के परिणामस्वरूप शारीरिक एवं चारित्रिक हानि उठानी पड़ सकती है, यह बताया गया है ।

अध्ययन कौशल

अपने मित्र द्वारा की गई लेखन की गलतियाँ दिखाओ और शब्दकोश की सहायता से सुधार करवाओ ।

(कोई एक रेलवे स्टेशन । प्लेटफार्म पर रेलगाड़ी खड़ी है । गाड़ी निकलने ही वाली है । इतने में फर्नांडिस हाँफता हुआ प्लेटफार्म पर आता है। सामनेवाले डिब्बे की ओर दौड़ता है । गाड़ी निकल चुकी है । जैसे-तैसे वह डिब्बे की पायदान पर खड़ा रहता है ।)

फर्नांडिस : आखिर गाड़ी मिल ही गई ।

रमण : इसमें नया क्या है ? रोज तुम ऐसा ही करते हो ।

श्याम : और नहीं तो क्या ? फर्नांडिस, कभी तो वक्त पर आया करो ।

फर्नांडिस : (दूसरे दरवाजे से टिकट चेकर को आते देख) बाप रे !

श्याम : क्यों ? क्या हुआ ?

फर्नांडिस : ये टिकट चेकर खन्ना कहाँ से आ टपका ?

रमण : यह तो वही बता सकता है!

फर्नांडिस : दोस्तो, अब बाहर झाँकने से कोई फायदा नहीं । गाड़ी की गति तेज हो गई है । इनसे बचने के लिए चलती गाड़ी से कूद भी नहीं सकते ।

श्याम : इसने जरूर हमें चढ़ते हुए देख लिया होगा ।

फर्नांडिस : रमण, लगता है अब तो सुबह का बचाया हुआ किराया भी जुर्माने के साथ भरना पड़ेगा ।

❑ इस संवाद का उचित आरोह-अवरोह के साथ आदर्श वाचन प्रस्तुत करें । प्रश्नोतर के माध्यम से पाठ का आशय समझाएँ । विद्यार्थियों से क्रमश: वाचन कराएँ । संवाद का नाट्यीकरण प्रस्तुत करने के लिए मार्गदर्शन करें । प्राप्त सीख अपनाने के लिए प्रेरित करें ।

जरा सोचो तो ... बताओ

अगर तुमको रेलगाड़ी चलाने के लिए मिल जाए तो ....

रमण : (फुसफुसाते हुए) फर्नांडिस, देखो वह तो तुम्हारी ही तरफ आ रहा है!

फर्नांडिस : एक काम करते हैं। अपना चेहरा उदास बनाकर सिर झुकाकर बैठते हैं ताकि कुछ सहानुभूति मिल सके ! (तीनों मुँह लटकाकर बैठते हैं।)

खन्ना : बच्चो, चलो अपने-अपने टिकट दिखाओ।

फर्नांडिस : (मरी-सी आवाज में) सर, माफ करें, लगता है कि गाड़ी में चढ़ते समय टिकट जेब से नीचे गिर गए।

श्याम/रमण : जी हाँ, जी हाँ, मेरा टिकट भी इसके पास था !

खन्ना : बच्चो, सच-सच बताओ, क्या सचमुच तुमने टिकट खरीदे थे और खो दिए हैं ?

फर्नांडिस : जी हाँ! बिलकुल सच है। हम भला झूठ क्यों बोले? वैसे भी हम कभी भी झूठ नहीं बोलते।

खन्ना : हाँ हाँ! केवल टिकट चेकर को छोड़कर तुम और लोगों से सच ही बोलते होंगे। मगर मेरा अनुभव तो कुछ और ही बताता है!

फर्नांडिस : जी, नहीं सर! हमारे टिकट सचमुच गिर गए हैं।

खन्ना : ऐसी बात है? तो फिर मैं आज तुम्हें ऐसा सबक सिखाऊँगा कि तुम्हारे टिकट फिर कभी नहीं गिरेंगे। चलो उठो। तीनों उस कोने में बैठ जाओ। उठो!
(तीनों कोने में बैठते हैं। खन्ना जी अन्य यात्रियों के टिकट चेक करने लगते हैं। इतने में राजापुर स्टेशन आता है।)

फर्नांडिस : दोस्तों, यह हमेशा की तरह इसी स्टेशन पर हमें डाँटकर छोड़ देगा।

रमण : कहेगा कि अब की बार छोड़ रहा हूँ। अगली बार सख्त सजा दूँगा !
(तीनों मुँह चुराकर हँसते हैं। तीनों उठने लगते हैं।)

खन्ना : चुपचाप बैठे रहो। हिलो मत। हाँ, अपने पिता का नाम और पता बताओ।

रमण : सर, प्लीज सर, हमें इस बार माफ कीजिए। कसम से फिर कभी भी ऐसा नहीं करेंगे।

खन्ना : बिलकुल नहीं। (अन्य यात्रियों से) आप लोग इनपर ध्यान रखिएगा। मैं जरा स्टेशन मास्टर से मिलकर आता हूँ। (खन्ना नीचे उतरते हैं। स्टेशन मास्टर से बात करके वे लौट आते हैं।)

खन्ना : चलो, उतरो नीचे।

फर्नांडिस : (आखिरी कोशिश करते हुए) सर, सर प्लीज इस बार...

खन्ना : चुप! चुपचाप मेरे पीछे चलो।
(तीनों नीचे उतरकर खन्ना के पीछे-पीछे चलने लगते हैं। कुछ दूर जाने के बाद खन्ना जी एक घर के सामने खड़े होते हैं। दरवाजा खटखटाते हैं। दरवाजा खुलता है।

खन्ना : बेटे राज, जरा उठोगे?
(राज उठने की कोशिश करता है। उठ नहीं पाता। क्योंकि उसकी दोनों टाँगें हैं हीं नहीं।)

खन्ना : देखा तुमने कि उसे खड़े होने में कितनी परेशानी हो रही है?

फर्नांडिस : जी हाँ।

खन्ना : तो क्या तुम भी इसकी तरह अपनी टाँगें तुड़वाना चाहते हो?

तीनो : (एक साथ, घबराहट भरी आवाज में) नहीं! नहीं!!

सदैव ध्यान में रखो

अनुशासन ही जीवन को सफल बनाता है ।

खन्ना : देखो फर्नांडिस, राज की यह ऐसी हालत क्यों हुई कुछ पता है तुम्हें ?
(इतने में अंदर से राज की माँ आती है ।)

माँ : बस बस! बहुत हो चुका खन्ना जी! अब मुझे बोलने दो । बच्चो, मैं राज की माँ । राज जब छोटा था, तब यह भी तुम्हारी ही तरह शैतान था, बिना टिकट सफर करके बहुत खुश होता था । कितनी बार मैंने समझाया! पर इसने माना नहीं । एक बार....एक बार.....

राज : रुको माँ । मैं बताता हूँ । बिना टिकट यात्रा करने में मुझे बड़ा मजा आता था । इससे जो पैसे बचते, उनसे मैं मिठाइयाँ खाता था । एक दिन चेकर जब अचानक डिब्बे में चढ़ा, तो मैं चलती गाड़ी से नीचे कूद पड़ा । सिग्नल और डिब्बे के बीच में फँसकर मैं अपनी दोनों टाँगें खो बैठा !

माँ : अच्छा बच्चो; छोड़ दो ये गंदी आदतें । बैठो आराम से । मैं खाना लगाती हूँ । (अंदर जाती है ।)

खन्ना : देखा तुमने बिना टिकट का परिणाम ?

फर्नांडिस : जी बिलकुल ! अब हम कभी भी ऐसा दुस्साहस नहीं करेंगे ।

खन्ना : शाबाश बच्चो ! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

पायदान = पैर रखने की जगह जुर्माना = आर्थिक दंड/सजा

दुस्साहस = ऐसा साहस जिससे हानि हो

मुहावरे

मुँह लटकाना = निराश होना

सबक सिखाना = पाठ पढ़ाना

स्वयं अध्ययन

सद्गुणों को आत्मसात करने के लिए क्या करोगे, इसपर आपस में चर्चा करो ।

विचार मंथन

।। ईमानदारी चरित्र निर्माण की नींव है ।।

खोजबीन

रेल इंजन का विकास किस प्रकार हुआ, अंतरजाल की सहायता से लिखो ।

सुनो तो जरा

रेलवे स्थानक पर उद्घोषक द्वारा दी जाने वाली सूचनाओं को सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

अगर आपका टिकट खो जाए तो आप क्या करोगे, बताओ ।

वाचन जगत से

हरिवंशराय बच्चन की कोई कविता पढ़ो और सुनाओ ।

मेरी कलम से

मित्र को अपनी किसी यात्रा का वर्णन करने वाला पत्र लिखो।

❊ कारण बताओ/लिखो ।

१. टिकट चेकर ने बच्चों को सबक सिखाना तय किया था।
२. तीनों लड़कों को लेकर टिकट चेकर एक घर के सामने खड़े रहे ।
३. बच्चों ने निश्चय किया कि वे अब कभी ऐसा दुस्साहस नहीं करेंगे ।
४. राज अपनी दोनों टाँगें खो बैठा था ।

भाषा की ओर

नीचे दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द शब्दकोश की सहायता से ढूँढ़कर लिखो ।

सूरज – भास्कर	आँख – ------	अतिथि – ------	फूल – ------
पृथ्वी – ------	कपड़ा – ------	आनन – ------	घर – ------
सागर – ------	चंदा – ------		